1 थिस्सलुनीकियों (भाग 1)
पद दर पद पुस्तक का अध्ययन
सितम्बर 03,2023

पहले और दुसरे थिस्सलुनीकियों की पृष्ठभूमि

हम प्रेरितों के काम 15:36 से 18:22 में पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा (सन् 49 – 52 ईस्वी) के बारे में पढ़ते हैं।

पौलुस की यह दूसरी यात्रा लगभग तीन साल तक जारी रही। इस दौरान पौलुस और उसका समूह (जिसमें सीलास और तिमुथियुस शामिल थे) ने एशिया माइनर और यूरोप के कई स्थानों का दौरा किया और कई स्थानीय कलीसियाओं की स्थापना की। उन्होंने उस समय के दुनिया के कुछ प्रमुख शहरों में प्रचार किया, जिनमें फिलिप्पी, थिस्सलुनीके, एथेंस, कुरिन्थुस और इफिसुस शामिल थे।

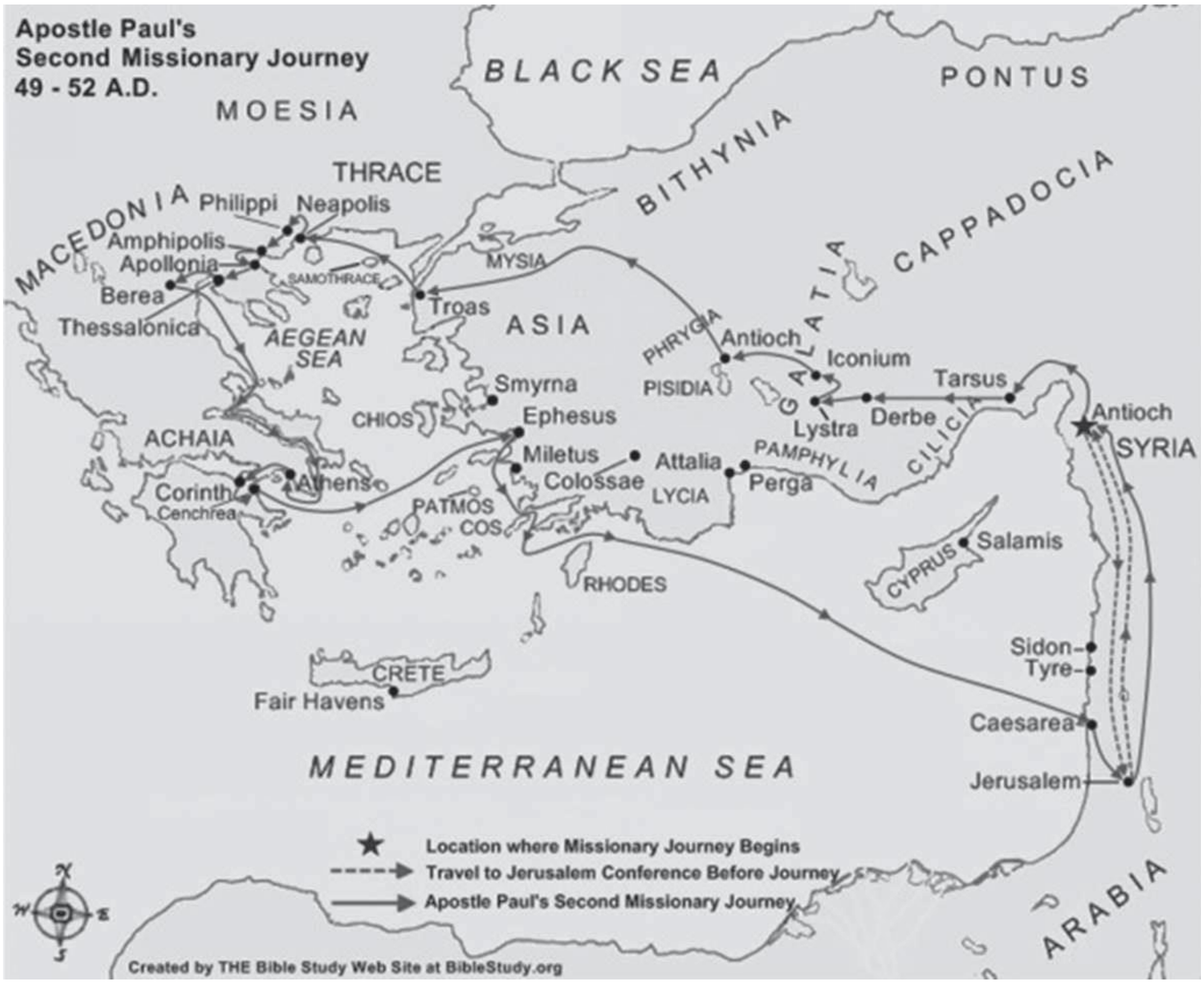

थिस्सलुनीकिया में पौलुस की सेवा का विवरण प्रेरितों के काम 17:1-10 में पाया जाता है। यह समूह यहाँ लगभग 4 सप्ताह (तीन सब्त, प्रेरितों के काम 17:2) तक रही होगी। सुसमाचार का प्रचार पवित्र

आत्मा की सामर्थ्य में किया गया था (1 थिस्सलुनीकियों 1:5)। पौलुस ने स्वयं काम करके थिस्सलुनीके में अपना और अपने समूह का भरण-पोषण किया (1 थिस्सलुनीकियों 2:9; 2 थिस्सलुनीकियों 3:6-10)। फिलिप्पी के पवित्र लोगों ने भी इस समूह की सहायता के लिए कुछ दान भेजा था (फिलिप्पियों 4:16)।

कुछ यहूदियों और कई अन्यजातियों ने विश्वास किया (प्रेरितों के काम 17:4)। जिन यहूदियों ने विश्वास नहीं किया, उन्होंने पौलुस और उसके समूह के विरुद्ध सताव करना शुरू कर दिया। उन्होंने विशेष रूप से यासोन नामक एक व्यक्ति के घर पर और कुछ नए विश्वासियों पर हमला किया। इसके बाद विश्वासियों ने तुरंत पौलुस और सीलास को बिरीया भेज दिया (प्रेरितों के काम 17:10-13)। बिरीया से पौलुस ने एथेन्स की यात्रा की। एथेन्स से, पौलुस ने तीमुथियुस को थिस्सलुनिके भेजा ताकि वहां उन विश्वासियों को प्रोत्साहित किया जा सके जिन्हें यहूदियों द्वारा सताया जा रहा था (1 थिस्सलुनीकियों 3:1,2)। एथेन्स से पौलुस कुरिन्थ गया जहाँ वह लगभग 18 महीने रुका (प्रेरितों के काम 18:11) और अक्विला और प्रिसकिल्ला के साथ मिलकर काम किया, जो यहूदी विश्वासी थे और रोम से कुरिन्थ आए थे। सीलास और तीमुथियुस मकिदुनिया से आकर, कुरिन्थ में पौलुस, अक्विला और प्रिसकिल्ला के साथ जुड़ गए (प्रेरितों के काम 18:5)। तीमुथियुस थिस्सलुनिके के विश्वासियों के विश्वास में निरंतर बने रहने के सुसमाचार को लेकर लौटता है (1 थिस्सलुनीकियों 3:6,7)। कुरिन्थ में रहते हुए ही पौलुस ने अपने पहली दो पत्रियाँ—1 थिस्सलुनीकियों और 2 थिस्सलुनीकियों—लगभग 52 ईस्वी (A.D. 52) के आसपास लिखे।

1 थिस्सलुनीकियों अध्याय 1

1 थिस्सलुनीकियों 1

1 पौलुस और सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम, जो परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह में है: अनुग्रह और शान्ति तुम्हें मिलती रहे।

- **वचन 1:**

चूंकि सीलास और तीमुथियुस कुरिन्थ में पौलुस के साथ थे, इसलिए उसने 1 और 2 थिस्सलुनीकियों दोनों पत्रियों के शुरुवाती अभिवादन में उन्हें शामिल किया है।

अपने अधिकांश अन्य पत्रियों के विपरीत, पौलुस ने 1 और 2 थिस्सलुनीकियों में स्वयं को "प्रेरित" नहीं कहा है। किसी कारणवश, उसने ऐसा करना आवश्यक नहीं समझा।

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को पत्र क्यों लिखा?

एक अनुस्मारक (Reminder) के रूप में – इन दोनों पत्रियों में शामिल अधिकांश बातें उन शिक्षाओं की याद दिलाती हैं जो पौलुस और उसके समूह ने थिस्सलुनिके में एक महीने रहने के दौरान उन्हें सिखाई थीं।
प्रोत्साहन के रूप में – ताकि वे उन सतावों से विचलित न हों जिनका वे सामना कर रहे थे।
सांत्वना और आशा के रूप में – उन लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया था, उन्हें प्रभु यीशु के आगमन और पुनरुत्थान की हमारी भविष्य की आशा के बारे में बताने के लिए।

[2] हम अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण करते और सदा तुम सब के विषय में परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं,
[3] और अपने परमेश्वर और पिता के सामने तुम्हारे विश्वास के काम, और प्रेम का परिश्रम, और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा की धीरता को लगातार स्मरण करते हैं।
[4] हे भाइयो, परमेश्वर के प्रिय लोगो, हम जानते हैं कि तुम चुने हुए हो।

- **वचन 2:**

हमें अपनी स्थानीय कलीसिया के लिए निरंतर प्रार्थना करने की आवश्यकता है।

- **वचन 3:**

विश्वास कार्य करता है। प्रेम परिश्रम करता है। आशा धीरजवंत होती है।

यहाँ "कार्य" और "परिश्रम" के बीच का अंतर बहुत ही रोचक है। कार्य शब्द का अर्थ है कोई प्रयास या गतिविधि। परिश्रम शब्द का अर्थ है उस कार्य को करने में होने वाली पीड़ा या थकान। "धीरज" शब्द का अर्थ है आनंद के साथ सहन करना।

1 कुरिन्थियों 13, में भी पौलुस ने एक विश्वासी के अन्दर विश्वास, आशा और प्रेम ये तीन गुणों के निरंतर बने रहने के विषय में बताया है:

- विश्वास हमें कार्य करने के योग्य बनाता है।
- प्रेम हमें पीड़ा और थकान सहने की शक्ति देता है।
- आशा हमें कठिन समय में भी आनंद के साथ स्थिर रहने की शक्ति देती है।

- **वचन 4:**

थिस्सलुनिके की कलीसिया में मुख्य रूप से यूनानी (अन्यजाति) लोग थे, साथ ही कुछ यहूदी विश्वासी भी थे। पौलुस उन दोनों को याद दिलाता है कि वे अब परमेश्वर द्वारा "चुने हुए" लोग हैं।

परमेश्वर सभी को बुलाता है। सुसमाचार हर किसी के लिए है—"जो कोई भी विश्वास करे।" जो लोग इस बुलावे का उत्तर देते हैं, वे ही परमेश्वर के चुने हुए या बुलाए हुए लोग कहलाते हैं।

[5] क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल शब्द मात्र ही में वरन् सामर्थ्य और पवित्र आत्मा में, और बड़े निश्चय के साथ पहुँचा है; जैसा तुम जानते हो कि हम तुम्हारे लिये तुम्हारे बीच में कैसे बन गए थे।
[6] तुम बड़े क्लेश में, पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ, वचन को मानकर हमारी और प्रभु की सी चाल चलने लगे।
[7] यहाँ तक कि मकिदुनिया और अखया के सब विश्वासियों के लिये तुम आदर्श बने।

सुसमाचार का प्रचार पवित्र आत्मा की शक्ति और बड़े आत्मविश्वास के साथ किया गया था। हमें आज भी यही करने की ज़रूरत है। हम उसी सुसमाचार का प्रचार कर रहे हैं। हमें सामर्थ से भरकर, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर और पूर्ण आत्मविश्वास के साथ प्रचार करना चाहिए। सुसमाचार को किसी माफी की आवश्यकता नहीं है।

यह "पूर्ण निश्चय" या पूर्ण आत्मविश्वास पौलुस, सिलास और तीमुथियुस के जीवन में और उनके द्वारा, उस एक महीने के दौरान दिखा, जब वे थिस्सलुनीकिया के नए विश्वासियों के साथ थे।

- **वचन 6:**

यह देखना दिलचस्प है कि पौलुस ने कैसे कहा कि नए विश्वासी "हमारे" अनुयायी बन गए। हम लोगों के बीच प्रभु का साकार रूप हैं। लोग हम में प्रभु को देखते हैं, और हमारा अनुसरण करते हैं, और ऐसा करके वे प्रभु का अनुसरण करते हैं।

पौलुस विशेष रूप से जिन गुणों की ओर इशारा कर रहा है, वे हैं "पूर्ण निश्चय" (पद 5) और "भारी क्लेश" के मध्य पवित्र आत्मा का आनंद है (पद)। सताव के बीच आत्मविश्वास और आनंद ही वह गुण था जिसमें पौलुस और उसके साथी चलते थे और नए विश्वासियों ने उसी उदाहरण को अपने जीवन में अपनाया।

पद 6-7 एक दिलचस्प "श्रृंखला अभिक्रिया" (chain reaction) या "दूरगामी प्रभाव" (ripple effect) को प्रकट करते हैं। पौलुस और उसके समूह ने प्रभु यीशु का अनुसरण किया और उदाहरण पेश किया। नए विश्वासियों ने पौलुस और उसकी साथियों का अनुसरण किया, और फिर मकिदुनिया के क्षेत्रों में वे (फिलिप्पी, बिरीया और अन्य शहरों) और अखाया (एथेंस और कुरिन्थुस के शहरों) के अन्य नए विश्वासियों के लिए उदाहरण बन गए। यदि हम एक उदाहरण पेश करते हैं, तो जो हमें देखते हैं, वे भी उस उदाहरण का पालन करते हैं, और दूसरों के लिए एक उदाहरण बन जाते हैं, ताकि हमारे द्वारा पेश किया गया उदाहरण दोहराया जाए और कई गुना बढ़ जाए।

[8] क्योंकि तुम्हारे यहाँ से न केवल मकिदुनिया और अखया में प्रभु का वचन सुनाया गया, पर तुम्हारे विश्वास की जो परमेश्वर पर है, हर जगह ऐसी चर्चा फैल गई है कि हमें कहने की आवश्यकता ही नहीं।
[9] क्योंकि वे आप ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना कैसा हुआ; और तुम कैसे मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो,
[10] और उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो जिसे उसने मरे हुओं में से जिलाया, अर्थात् यीशु की, जो हमें आनेवाले प्रकोप से बचाता है।

थिस्सलुनीके के नए विश्वासी मकिदुनिया और अखया के बाहर भी सुसमाचार की घोषणा कर रहे थे। परमेश्वर पर उनका विश्वास और मूरतों से फिरकर सच्चे तथा जीवित परमेश्वर की सेवा करने का समाचार कई अन्य क्षेत्रों में फैल गया था।

1 थिस्सलुनीकियों अध्याय 2

1 थिस्सलुनीकियों 2
[1] हे भाइयो, तुम आप ही जानते हो कि हमारा तुम्हारे पास आना व्यर्थ न हुआ ।
[2] वरन् तुम आप ही जानते हो कि पहले फिलिप्पी में दुख उठाने और उपद्रव सहने पर भी हमारे परमेश्वर ने हमें ऐसा साहस दिया, कि हम परमेश्वर का सुसमाचार भारी विरोधों के होते हुए भी तुम्हें सुनाएँ।

पौलुस इन विश्वासियों को याद दिलाता है कि कैसे उसके समूह ने फिलिप्पी में कष्ट सहे थे, जहाँ उन्हें पीटा गया था और पैरों में बेड़ियाँ ठोककर जेल की कालकोठरी में डाल दिया गया था (प्रेरितों के काम 16:23,24)। पौलुस याद करता है कि फिलिप्पी में सताव झेलने के बावजूद भी, वे कैसे थिस्सलुनीके में आए उन्होंने साहस के साथ सुसमाचार का प्रचार किया। पौलुस अब यह महसूस करता है कि उनका परिश्रम व्यर्थ नहीं गया, क्योंकि थिस्सलुनीके में विश्वासियों का एक फलता-फूलता समुदाय स्थापित हो गया था।

³ क्योंकि हमारा उपदेश न भ्रम से है और न अशुद्धता से, और न छल के साथ है;
⁴ पर जैसा परमेश्वर ने हमें योग्य ठहराकर सुसमाचार सौंपा, हम वैसा ही वर्णन करते हैं, और इस में मनुष्यों को नहीं, परन्तु परमेश्वर को, जो हमारे मनों को जाँचता है, प्रसन्न करते हैं।
⁵ क्योंकि तुम जानते हो कि हम न तो कभी चापलूसी की बातें किया करते थे, और न लोभ के लिये बहाना करते थे, परमेश्वर गवाह है;
⁶ और यद्यपि हम मसीह के प्रेरित होने के कारण तुम पर बोझ डाल सकते थे, तौभी हम मनुष्यों से आदर नहीं चाहते थे, और न तुम से, न और किसी से।

- **वचन 3-6:**

सुसमाचार सुनाते और सेवा करते समय इन सात बातों से बचें:

1. गलती या भ्रम – असत्य का प्रचार न करे।
2. अशुद्ध, अपवित्र उद्देश या चालबाज़ी – लोगों को बहला-फुसलाकर या चालाकी से विश्वास में लाने की कोशिश न करें।
3. धोखा देना या गुमराह करना – लोगों को जानबूझकर गलत रास्ते पर न ले जाएं।
4. चापलूसी भरी बातें – अपनी बात मनवाने के लिए झूठी प्रशंसा या चिकनी-चुपड़ी बातों का सहारा न लें।
5. लालच का पर्दा (लोभ का आवरण) – अपनी सेवा के पीछे पैसे या किसी भी तरह के लालच को न छिपाएं।
6. मनुष्यों से महिमा पाने की चाह – लोगों से प्रशंसा पाने या अपना नाम कमाने की कोशिश न करें।
7. मांगें करना – मसीह के सेवक होने के नाते दूसरों पर अनुचित मांगें या बोझ न डालें।

- **वचन 4:**

"सेवकों के रूप में हमें यह जानना चाहिए कि परमेश्वर ने हमें स्वीकार किया है (उन्होंने हमें जांचा और योग्य पाया है) और हमें सुसमाचार की जिम्मेदारी सौंपी है। इसलिए, जब हम प्रचार और सेवा करते हैं, तो हमें मनुष्यों को नहीं, बल्कि परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहिए जो 'हमारे मनों को जांचता है' और हमारे इरादों को पहचानता है।"

परमेश्वर हमारे हृदय को जांचता है (पद 4)
परमेश्वर गवाह है (पद 5)

⁷ परन्तु जिस तरह माता अपने बालकों का पालन–पोषण करती है, वैसे ही हम ने भी तुम्हारे बीच में रहकर कोमलता दिखाई है;
⁸ और वैसे ही हम तुम्हारी लालसा करते हुए, न केवल परमेश्वर का सुसमाचार पर अपना अपना प्राण भी तुम्हें देने को तैयार थे, इसलिये कि तुम हमारे प्रिय हो गए थे।

प्रेरित पौलुस ने इस बात की ओर इशारा किया कि थिस्सलुनीके में जब वह एक महीने के लिए सेवकाई कर रहा था तब उस दौरान वह स्वयं कैसे जीवन बिताता था। यह स्पष्ट है कि उस थोड़े से समय में ही, नए विश्वासियों ने पौलुस और उसके समूह के हृदय में एक विशेष स्थान बना लिया थी—"तुम हमारे प्रिय हो गए हो"।

पौलुस और उसके साथियों ने इन नए विश्वासियों के साथ इस प्रकार काम किया:

- कोमलता के साथ – धीरज और दयालुता रखते हुए।

- सच्ची देखभाल के साथ – जैसे एक दूध पिलाने वाली माता अपने बच्चों का पालन-पोषण करती है।
- गहरे लगाव (स्नेह) के साथ – उनके लिए मन में सच्चा प्रेम रखते हुए।
- स्वेच्छा से बलिदान के साथ – अपने आपको उनके जीवन के लिए देने के लिए तैयार रहना।

हमें उन लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए जिनके बीच हमें सेवा करने के लिए बुलाया गया है?

9 क्योंकि, हे भाइयो, तुम हमारे परिश्रम और कष्ट को स्मरण रखते हो; हम ने इसलिये रात दिन काम धन्धा करते हुए तुम में परमेश्‍वर का सुसमाचार प्रचार किया कि तुम में से किसी पर भार न हों।
10 तुम आप ही गवाह हो, और परमेश्‍वर भी गवाह है कि तुम विश्‍वासियों के बीच में हमारा व्यवहार कैसा पवित्र और धार्मिक और निर्दोष रहा।
11 तुम जानते हो कि जैसा पिता अपने बालकों के साथ व्यवहार करता है, वैसे ही हम भी तुम में से हर एक को उपदेश करते, और शान्ति देते, और समझाते थे
12 कि तुम्हारा चाल–चलन परमेश्‍वर के योग्य हो, जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है।

प्रेरित पौलुस नए विश्वासियों को अपने समूह की इन बातों की याद दिलाते हैं:
हमारा कार्य – परिश्रम और कष्ट। इसका अर्थ यह है कि पौलुस और उसके समूह ने अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्वयं काम किया।
हमारा आचरण – (भक्तिपूर्ण, धर्मी, और निर्दोष)
हमारी सेवा – उत्साहित करना, शांति देना, और प्रेरित करना
जब लोग हमारे कार्य, आचरण और सेवा को देखते हैं, तो क्या वे हममें इन गुणों को पाते हैं?

हमें विश्वासियों के साथ कार्य करना चाहिए और उन्हें यह स्मरण दिलाना चाहिए कि परमेश्वर की बुलाहट के योग्य चाल चले।

13 इसलिये हम भी परमेश्‍वर का धन्यवाद निरन्तर करते हैं कि जब हमारे द्वारा परमेश्‍वर के सुसमाचार का वचन तुम्हारे पास पहुँचा, तो तुम ने उसे मनुष्यों का नहीं परन्तु परमेश्‍वर का वचन समझकर (और सचमुच यह ऐसा ही है) ग्रहण किया; और वह तुम विश्‍वासियों में जो विश्‍वास रखते हो, प्रभावशील है।

पौलुस इन विश्वासियों की प्रशंसा करते हैं कि उन्होंने किस प्रकार उन वचनों किया जो उन्हें सुनाया गया था। और क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के वचन का आदर के साथ स्वागत किया, इसलिए उस वचन ने उनमें सामर्थ्य के कार्य किये।

प्रचार के माध्यम से जो वचन हम सुनते हैं, उसे हम कैसे ग्रहण करते हैं?

हम किस तरह से वचन ग्रहण करते हैं यह व्यवहार इस बात को सुनिश्चित करता है कि वचन हमारे जीवन में कितना प्रभावशाली रीती से कार्य करेगा।

14 इसलिये तुम, हे भाइयो, परमेश्‍वर की उन कलीसियाओं की सी चाल चलने लगे जो यहूदिया में मसीह यीशु में हैं, क्योंकि तुम ने भी अपने लोगों से वैसा ही दुख पाया जैसा उन्होंने यहूदियों से पाया था,
15 जिन्होंने प्रभु यीशु को और भविष्यद्वक्‍ताओं को भी मार डाला और हम को सताया, और परमेश्‍वर उन से प्रसन्न नहीं, और वे सब मनुष्यों का विरोध करते हैं,
16 और वे अन्यजातियों से उनके उद्धार के लिये बातें करने से हमें रोकते हैं कि सदा अपने पापों का नपुआ भरते रहें; पर उन पर परमेश्‍वर का भयानक प्रकोप आ पहुँचा है।

थिस्सलुनीके की कलीसिया यहूदियों द्वारा किए जा रहे सताव के बीच भी उसी तरह डटी रही, जैसे यरूशलेम और उसके आसपास के विश्वासी डटे रहे थे।

[17] हे भाइयो, जब हम थोड़ी देर के लिये, मन में नहीं वरन् प्रगट में, तुम से अलग हो गए थे, तो हम ने बड़ी लालसा के साथ तुम्हारा मुँह देखने के लिये और भी अधिक यत्न किया।
[18] इसलिये हम ने (अर्थात् मुझ पौलुस ने) एक बार नहीं वरन् दो बार तुम्हारे पास आना चाहा, परन्तु शैतान हमें रोके रहा।

पौलुस थिस्सलुनीके में दोबारा से नए विश्वासियों से मिलने की इच्छा व्यक्त करते हैं।

हमें यह पहचानना चाहिए कि शैतान सेवकाई में हमारे विरुद्ध क्या क्या काम करता है। थिस्सलुनीके के यहूदियों ने पौलुस का कड़ा विरोध किया, वे पौलुस पर हमला करने और उनके काम में बाधा डालने के लिए बिरीया तक आ गए थे और उन्होंने पौलुस को थिस्सलुनीके से बाहर रखने की कोशिश की – पौलुस ने कहा "शैतान ने हमें रोके रखा"। क्या पौलुस इस बाधा को धकेल कर आगे बढ़ सकते थे? हाँ, वह बढ़ सकते थे। लेकिन उन्होंने अन्य शहरों तक पहुँचने के लिए अपनी मिशनरी यात्रा जारी रखना ज़्यादा महत्वपूर्ण समझा। हमें अपनी लड़ाइयों को बहुत सोच-समझकर चुनना चाहिए। हर लड़ाई लड़ने लायक नहीं होती।

[19] भला हमारी आशा या आनन्द या बड़ाई का मुकुट क्या है? क्या हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय तुम ही न होगे?
[20] हमारी बड़ाई और आनन्द तुम ही हो।

कितना शक्तिशाली कथन है! जब हम प्रभु यीशु मसीह की उपस्थिति में खड़े होंगे, तो हम किस बात पर "घमंड" या गर्व कर सकते हैं? क्या हम किसी सांसारिक उपलब्धि पर घमंड कर सकते हैं? पौलुस के अनुसार इसका उत्तर है "लोग" – वे लोग जिनकी हमने सेवा की, वे ही प्रभु की उपस्थिति में हमारी आशा, आनंद, मुकुट, महिमा और हर्ष का कारण हैं। हम उन लोगों को देखते हैं जो वहाँ इसलिए हैं क्योंकि हमने यीशु की सेवा की और हम सब मिलकर उनकी उपस्थिति में आनंद मनाते हैं!

लाइफ़ ग्रुप अध्ययन मार्गदर्शिका

यह लाइफ ग्रुप चर्चाओं में उपयोग के लिए एक सरल मार्गदर्शिका है। हमारा उद्देश्य रविवार के संदेश के अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करना है—कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति वचन का करने वाला बन रहा है और अपने जीवन को परमेश्वर के पवित्र वचन पर बना रहा है। लाइफ ग्रुप की सभा सामान्यतः 2 घंटे की होती है। प्रत्येक लाइफ ग्रुप में लगभग 12-15 लोग होते हैं।

तैयारी

लाइफ ग्रुप बैठक की तैयारी के लिए, आप Sermon Key Points (पाँच मिनट में संदेश का सार) या पूरा रविवार का संदेश सुन सकते हैं। आप रविवार के संदेश के नोट्स भी देख सकते हैं। यह सभी "All Peoples Church Bangalore-ऑल पीपल्स चर्च बैंगलोर" मोबाइल ऐप में या ऑनलाइन **apcwo.org/sermons** पर उपलब्ध हैं। लाइफ ग्रुप बैठक के लिए प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा के कार्य और सेवकाई को आमंत्रित करें।

स्वागत

लाइफ ग्रुप बैठक की शुरुआत प्रार्थना, आराधना और किसी मनोरंजक गतिविधि के समय से हो सकती है।

परमेश्वर के वचन को सुनें

निम्नलिखित शास्त्र खंड पढ़ें: 1 थिस्सलुनीकियों अध्याय 1, 2

मिलकर परमेश्वर के वचन की जाँच करें

कृपया इनमें से कुछ प्रश्नों पर मिलकर चर्चा करें, और लोगों को अपनी समझ साझा करने का अवसर दें। हम प्रत्येक व्यक्ति को प्रोत्साहित करते हैं कि समूह चर्चा के दौरान अपने व्यक्तिगत सीख को लिख लें।

1. *चर्चा करें: विश्वास के कार्य। प्रेम में परिश्रम। आशा में धीरज। (1 थिस्सलुनीकियों 1:3)। विश्वासियों के रूप में हम इसे अपने दैनिक जीवन में कैसे लागू करते हैं?*

2. *थिस्सलुनीकियों 2:3-6 के आधार पर, परमेश्वर की सेवा करते समय बचने योग्य सात बातों पर चर्चा करें:*
    1) *भ्रम, मोह – असत्य का प्रचार न करें।*
    2) *अशुद्धता, अशुद्ध मंशा, युक्ति – लोगों को विश्वास दिलाने के लिए छल करने का प्रयास न करें।*
    3) *धोखा, गुमराह करने का इरादा, मूर्ख बनाना – लोगों को गुमराह न करें।*
    4) *चापलूसी भरे शब्द – चालाकी भरी प्रशंसा का उपयोग करने का प्रयास न करें।*
    5) *लालच का पर्दा ("लोभ का बहाना") – किसी भी प्रकार के लालच से बचें।*
    6) *मनुष्यों से महिमा चाहना – लोगों की वाहवाही या प्रशंसा न खोजें।*
    7) *मांग करना – दूसरों से मांगें न करें।*

3. इन दो अध्यायों से अपनी एक मुख्य सीख साझा करें।

यदि समय अनुमति दे, तो प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम तीन मिनट) लेकर एक या दो मुख्य सीख साझा करे और यह बताए कि वे इसे अपने विशिष्ट जीवन परिस्थितियों में कैसे लागू होते हुए देखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अपने जीवन और आत्मिक यात्रा को साझा करते हुए संगति करें

प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम 3 मिनट) लेकर परमेश्वर के साथ अपने जीवन से संबंधित कुछ भी साझा करे—जो कुछ परमेश्वर उन्हें सिखा रहा है, प्रार्थना के उत्तर की कोई गवाही, या कोई विशेष चुनौती जिसके लिए वे प्रार्थना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें—प्रार्थना और सेवकाई के द्वारा

दो या तीन लोगों के छोटे समूहों में बँट जाएँ और बारी-बारी से आज जो सीखा गया है उसके प्रकाश में परमेश्वर को धन्यवाद दें और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा की अगुवाई सुनें। पवित्र आत्मा के वरदानों के बहने की अपेक्षा रखें—चंगाई, चमत्कारों की रिहाई, भविष्यवाणी आदि के द्वारा।

पुनः एकत्रित हों और इन विषयों के लिए मिलकर प्रार्थना करें:

1) परिवारों की सुरक्षा और सुदृढ़ता के लिए

2) कलीसिया के रूप में हम पर परमेश्वर के पवित्र आत्मा का एक शक्तिशाली उंडेलाव हो, और हमारे द्वारा हमारे नगर और राष्ट्र में बहुतों को आशीष मिले। केवल परमेश्वर के आत्मा का सामर्थी कार्य ही हमारे नगर और राष्ट्र को बदल सकता है।

3) BUILD TO IMPACT (प्रभाव के लिए निर्माण करें) परियोजना के लिए—भूमि की खोज और अधिग्रहण की प्रक्रिया में परमेश्वर के हाथ की अगुवाई के लिए, और इस परियोजना को पूरा करने के लिए पर्याप्त से भी अधिक वित्तीय प्रावधान के लिए।

एक साथ मिलकर परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए समाप्त करे।

उपयोगी संसाधन

हर रविवार सुबह 10:30 बजे (भारतीय समय, GMT+5:30) हमारी ऑनलाइन संडे चर्च सेवा का लाइव प्रसारण देखें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त आराधना, वचन और चंगाई, चमत्कार तथा छुटकारे की सेवा।
यूट्यूब: https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
वेबसाइट: https://apcwo.org/live

हमारी अन्य वेबसाइट्स और निःशुल्क संसाधन:
चर्च: https://apcwo.org
निःशुल्क संदेश: https://apcwo.org/resources/sermons
निःशुल्क पुस्तकें: https://apcwo.org/books/english
दैनिक भक्ति-वचन: https://apcwo.org/resources/daily-devotional
यीशु मसीह: https://examiningjesus.com
बाइबल कॉलेज: https://apcbiblecollege.org
ई-लर्निंग: https://apcbiblecollege.org/elearn
वीकेंड स्कूल्स: https://apcwo.org/ministries/weekend-schools
काउंसलिंग: https://chrysalislife.org
संगीत: https://apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: https://pamfi.org
चर्च ऐप: https://apcwo.org/app
चर्चेस: https://apcwo.org/ministries/churches
विश्व मिशन: https://apcworldmissions.org

उपदेश की रूपरेखा

यह उपदेश श्रृंखला 1 और 2 थिस्सलुनीकियों का पद-दर-पद अध्ययन है, जो प्रेरित पौलुस द्वारा लिखे गए पहली दो पत्री हैं। इस उपदेश श्रृंखला के भाग-1 में हम थिस्सलुनीके में पौलुस की सेवकाई की एक संक्षिप्त पृष्ठभूमि प्रदान करते हैं, और फिर 1 थिस्सलुनीकियों के अध्याय 1 और 2 को पढ़ते हैं। हम सीखते हैं कि मसीही जीवन के लिए विश्वास, आशा और प्रेम कितने महत्वपूर्ण हैं। हम सताव के दौरान आनंदपूर्वक सहने का महत्व सीखते हैं। हम यीशु मसीह के सुसमाचार के ईश्वरीय सेवक होने के गुणों को सीखते हैं।

मुख्य शब्द

1 थिस्सलुनीकियों, 2 थिस्सलुनीकियों, उपदेश, उपदेश के नोट्स, उपदेश की रूपरेखा, निःशुल्क उपदेश नोट्स, निःशुल्क उपदेश की रूपरेखा, बाइबल अध्ययन के संसाधन।

संदर्भ / उद्धरण

जब तक अन्यथा संकेत न दिया गया हो, सभी पवित्रशास्त्र के वचन न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबिल 2020 (NASB) से लिए गए हैं, कॉपीराइट © द लॉकमैन फाउंडेशन द्वारा। सर्वाधिकार सुरक्षित।

बाइबिल की परिभाषाएँ, इब्रानी और यूनानी शब्द और उनके अर्थ संबंधित विश्वसनीय स्रोतों से लिए गए हैं।

थेयर्स ग्रीक डेफिनिशन्स। 1886, 1889 में प्रकाशित; सार्वजनिक डोमेन।

स्ट्रॉन्स हिब्रू एंड ग्रीक डिक्शनरीज़, स्ट्रॉन्स एग्जॉस्टिव कॉन्कॉर्डेंस जेम्स स्ट्रॉन्ग के द्वारा, S.T.D., LL.D 1890 में प्रकाशित; सार्वजनिक डोमेन।

वाइन्स कम्प्लीट एक्सपोजिटरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एंड न्यू टेस्टामेंट वर्ड्स, © 1984, 1996, थॉमस नेल्सन, इंक., नैशविले, टीएन

माउन्स कंसाइज ग्रीक-इंग्लिश डिक्शनरी। विलियम डी. माउन्स और रिक डी. बेनेट, जूनियर द्वारा संपादित (1993)

वर्ड पिक्चर्स इन द न्यू टेस्टामेंट, आर्चिबाल्ड थॉमस रॉबर्टसन। 1930-1933 में प्रकाशित; सार्वजनिक डोमेन।

वर्ड स्टडीज इन द न्यू टेस्टामेंट। मार्विन आर. विंसेंट, डी.डी. (1886)